

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 11, जॉन 9:1-41

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 11 है, टेन्स टाइम्स इन जेरूसलम, द ब्लाइंड मैन एंड द ब्लाइंड मेन, जॉन 9:1-41।

नमस्ते, मैं डेविड टर्नर हूँ।

जॉन अध्याय 9 पर हमारे वीडियो में आपका स्वागत है। जॉन अध्याय 8, जॉन अध्याय 9 की ओर ले जाने वाला एक अद्भुत अध्याय रहा है, एक ऐसा अध्याय जिसमें यरूशलेम में चीजें इतनी अच्छी तरह से नहीं चल रही हैं और बहुत कठिनाई पैदा हो रही है। और निस्संदेह, यीशु ने कहा है कि वह संसार की ज्योति है और जो लोग उसका अनुसरण करेंगे वे अंधकार में नहीं चलेंगे। हालाँकि, अध्याय में, शायद बहुत अंधकार चल रहा है।

फिर भी, यह अध्याय हमें यूहन्ना अध्याय 9 के लिए एक अर्थ में तैयार करता है, जहां यीशु एक ऐसे व्यक्ति को ठीक करने वाला है जो मानो जीवन भर अंधेरे में रहा हो, एक ऐसा व्यक्ति जो अंधा पैदा हुआ था। इसलिए, जॉन अध्याय 9 में, हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि उसके अंधेपन का उसके या उसके माता-पिता के किसी भी पाप से कोई लेना-देना नहीं था। वहाँ कोई दण्ड नहीं दिया जा रहा है, बल्कि यह परमेश्वर को महिमा दिलाने के लिए है।

तो, हम देखते हैं कि जिस तरह से यीशु इस व्यक्ति की देखभाल कर रहा है और उसके साथ व्यवहार कर रहा है, उससे परमेश्वर की महिमा कैसे होगी। और यह अध्याय एक बहुत गहरे विरोधाभास या विडंबना पर समाप्त होने जा रहा है, जहां जो लोग सोचते हैं कि वे देखने में सक्षम हैं वे वास्तव में अंधे हैं। और जो अंधा है वह वास्तव में अब एक से अधिक तरीकों से देखने वाला है।

तो, हम वैसे ही शुरू करते हैं जैसे हम थे, जैसा कि हमारी आदत रही है, अध्याय के खुलने के तरीके को केवल कथा प्रवाह के संदर्भ में देखना। और हम उससे शुरू करते हैं। फिर हम वहां कुछ विषयगत मामलों पर गौर करेंगे जिनमें हमारी रुचि है।

तो जैसे ही अध्याय शुरू होता है, जाहिर है, यीशु का सामना अंधे व्यक्ति से होता है और उसका सामना एक अंधविश्वास, अंधेपन के बारे में एक विश्वदृष्टि से भी होता है। इसलिए, अध्याय 9, श्लोक 2 में शिष्य यीशु से पूछते हैं, रब्बी, किसने पाप किया, इस आदमी ने या उसके माता-पिता ने, कि वह अंधा पैदा हुआ था। यह निहितार्थ कि मनुष्य अपने माता-पिता के पाप के कारण अंधा पैदा हुआ था, ईश्वर का एक दिलचस्प दृष्टिकोण है।

माता-पिता के किसी कृत्य की सजा भगवान एक निर्दोष बच्चे को देंगे। यह मेरे लिए कुछ हद तक हैरान करने वाला है कि क्या ईश्वर किसी व्यक्ति को उसके संभावित पाप के लिए उसके जीवन में

आने से पहले ही दंडित करेगा। तो क्या उसने पाप किया कि वह अंधा पैदा हुआ? खैर, मुझे नहीं पता कि क्या गर्भ में पाप के बारे में उनका कोई दृष्टिकोण था या क्या उन्होंने सोचा था कि भगवान उसे अंधा कर देंगे क्योंकि भगवान को पहले से पता था कि वह पैदा होने के बाद पाप करेगा।

किसी भी तरह से, कम से कम मेरे दिमाग में, यह ईश्वर के बारे में एक बहुत ही अजीब दृष्टिकोण है, न कि वह ईश्वर जिसे मैं पवित्रशास्त्र के बाकी हिस्सों में वर्णित देखता हूँ। किसी भी घटना में, हम आज भी इस तरह के विश्वदृष्टिकोण का सामना करते हैं क्योंकि उनके पास ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अनिवार्य रूप से कहेंगे कि भगवान ने उन्हें इसके लिए, होने वाली चीजों के लिए बनाया है। और मुझे लगता है कि यह ईश्वर और दुनिया के बारे में एक उप-बाइबिल दृष्टिकोण है।

लेकिन फिर भी, जैसे-जैसे हम अध्याय में आगे बढ़ेंगे हम इसके बारे में और अधिक बात करेंगे। तो, हम यहां पढ़ते हैं कि कैसे यीशु का सामना अंधे आदमी से होता है और वह पाप के बारे में गलत धारणा का खंडन करता है। वह उस आदमी को ऐसे तरीके से ठीक करता है जो थोड़ा असामान्य है।

हम स्पिटल के उपयोग के माध्यम से इसके बारे में बाद में कुछ बात करेंगे। किसी तरह, मुझे लगता है कि मुझे स्पिटल शब्द का उपयोग करने की आदत नहीं है। मैं सिर्फ थूक शब्द का उपयोग करना चाहूंगा।

तो, अगर यह थोड़ा असंवेदनशील है, तो क्षमा करें, मुझे लगता है कि मेरा पालन-पोषण इसी तरह हुआ है। तो, मैं इसे सिर्फ थूक ही कहूंगा। मुझे आशा है कि यह सब ठीक है।

तब उस ने भूमि पर थूका, और उस थूक से मिट्टी सानी, और उस पुरुष की आंखों पर लगाई, और कहा, जाकर शीलोह के कुण्ड में धो ले। हमने पहले अध्याय सात में सिलोम के तालाब के बारे में बात की है, जो झोपड़ियों के पर्व से संबंधित है और महायाजक मंदिर में जल ग्रहण करने के लिए वहां से पानी ले रहा था, शायद जॉन अध्याय सात, छंद 37 से 39 की पृष्ठभूमि के रूप में। तो, वह आदमी गया और धोया।

पाठ इसका बहुत सरलता से वर्णन करता है। पद सात में, वह गया और उसने धोया और वह देखते हुए घर आया, बिल्कुल इसी तरह। तो, यह स्पष्ट रूप से पड़ोस में एक सनसनी थी।

तो, उसके सभी पड़ोसियों ने उससे सवाल करना शुरू कर दिया, श्लोक आठ से 12 तक, और पूछना शुरू कर दिया कि वहां क्या हुआ था। तो, वह कहानी दोहराता है। यह दिलचस्प है कि कुछ लोगों ने कहा, वह वही आदमी नहीं हो सकता।

मुझे लगता है कि वे इस पर विश्वास नहीं करना चाहते थे या बस संशय में थे। तो उन्होंने कहा, ये उसके जैसा दिखता है. आखिरकार यह वास्तव में वही व्यक्ति नहीं है।

तो, वह जोर देकर कहता रहा, मैं ही वह आदमी हूँ। तो, यह इस अध्याय का एक दिलचस्प हिस्सा है। यह पूर्व अंधा व्यक्ति एक दिलचस्प चरित्र है क्योंकि वह इस बात से परेशान रहता है कि उसके साथ क्या हुआ।

और इसलिए, सबसे पहले, वह अपने पड़ोसियों से परेशान होता है। उसके माता-पिता बिल्कुल खड़े होकर उसका समर्थन नहीं करते। बेशक, फरीसी उसका मज़ाक उड़ाते हैं और हर संभव तरीके से उसे नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं।

और अंत में, अध्याय के अंत में, यीशु उसके पास आते हैं और उसे यीशु और उसके मिशन की पूरी समझ की ओर ले जाते हैं। और हम देखते हैं कि इस आदमी की हताशा श्लोक नौ से शुरू होती है। यहाँ वह है।

वह ठीक हो गया है और लोगों को विश्वास ही नहीं हो रहा है कि वह वही आदमी है। तो, वह कहता है, हाँ, यह मैं हूँ। यह मैं हूँ।

मैं वास्तव में वही आदमी हूँ. और यह थोड़ा असामान्य लगता है कि उनका यह दृष्टिकोण था। इसलिए, वे जानना चाहते थे कि उसकी आँखें कैसे खुली थीं।

तो, उसे श्लोक 11 में पूरी कहानी दोहरानी होगी। तो, उन्होंने कहा, अच्छा, वह आदमी कहाँ है जिसने यह किया? और वह कहता है मुझे नहीं पता. उस समय तक, यीशु अन्य काम करने के लिए चला गया है।

तो, यह कहानी की पृष्ठभूमि है। इस तरह से यह सब शुरू होता है। वह आदमी ठीक हो गया.

पड़ोसी उससे पूछताछ कर रहे हैं और उन्हें लगता है कि ये तो कमाल की बात है. इसलिए इसकी जाँच धार्मिक नेताओं द्वारा की जानी चाहिए। इसलिए, पद 13 और उसके बाद, वे उसे फरीसियों के पास ले गए और फरीसी उस व्यक्ति से पूछताछ करने लगे।

और यहाँ हमारे पास श्लोक 13 से 34 हैं, वास्तव में अध्याय का मुख्य भाग और अध्याय का वह भाग जो मुझे लगता है कि साहित्य के रूप में सबसे दिलचस्प है, क्योंकि यहाँ काफी हास्य है, मुझे लगता है, जैसे फरीसी आदमी से सवाल करते हैं, श्लोक 13 से 17 तक, यह सब कैसे हुआ। तो, वह एक बार फिर दोहराता है कि क्या हुआ था। वह पहले ही पड़ोसियों के लिए ऐसा कर चुका है।

अब उसे फरीसियों के लिए यह करना होगा। तो, श्लोक 17 में, वे उससे कहते हैं, ठीक है, यह कैसे हो सकता है? आपको उसके बारे में क्या कहना है? तुम्हारी आँखें कैसे खुली थीं? तो, आदमी कहता है, ठीक है, इस तरह की चीजें हर दिन नहीं होती हैं। तो, यहाँ कुछ असामान्य घटित हो रहा है।

तो, मुझे लगता है कि वह एक भविष्यवक्ता है। श्लोक 17. तो, इस बिंदु पर, यीशु के बारे में उस व्यक्ति की समझ यरूशलेम की शुरुआत में भीड़ में मौजूद उन लोगों से भिन्न नहीं है, जिन्होंने अध्याय 2 के अंत में यीशु को संकेत करते देखा था और बड़ी भीड़ में अन्य लोगों ने यीशु को काम करते देखा था। अध्याय 6 में उन लोगों की तरह जिन्हें यीशु ने भीड़ को खाना खिलाते समय खिलाया था और सोचा था कि यह आदमी अवश्य ही भविष्यवक्ता होगा।

वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसे हम राजा बना सकें। उन्होंने सोचा कि वे उसे किसी प्रकार का मसीहा बना सकते हैं जो हर समय उनकी देखभाल करेगा। तो, यीशु के बारे में मनुष्य की समझ उन प्रकार की चीजों के समान है।

वह समझ जाता है कि उस आदमी के साथ कुछ हो रहा है। शायद वह अध्याय 3 में निकोडेमस से भिन्न नहीं है जिसने कहा, निश्चित रूप से आपका शिक्षक ईश्वर से आता है क्योंकि इस प्रकार की चीजें पेड़ों पर नहीं उगती हैं। ऐसा हर समय नहीं होता।

तो निःसंदेह, फरीसियों को इसे समझने में कठिनाई होती है। और सोचो क्यों? इसी कारण से, हमने अध्याय 5 पर वापस जाने से पहले इसे देखा है। श्लोक 16 के अनुसार, कुछ फरीसियों ने कहा कि यह व्यक्ति, अर्थात् यीशु, ईश्वर से नहीं हो सकता क्योंकि वह ईश्वर का पालन नहीं करता है। विश्रामदिन। तो किसी तरह वे शायद इस नतीजे पर पहुंचे थे कि यीशु धूल में थूककर और उस आदमी की आंखों पर मिट्टी डालकर सब्त के दिन काम कर रहे थे या उन्होंने सोचा कि यीशु ने उसे सब्त के दिन बहुत दूर तक चलने के लिए मजबूर किया था, वहां कुछ ऐसा हो रहा था उन्होंने सोचा कि यह सब्त के दिन का उल्लंघन है।

तो, आयत 18 कहती है कि उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि वह आदमी क्या कह रहा था, इसलिए उन्होंने उस आदमी के माता-पिता को बुलाया। तो, अब माता-पिता घटनास्थल पर आते हैं और इसलिए माता-पिता के साथ कुछ चर्चा होती है। माता-पिता प्रतिबद्ध नहीं हैं क्योंकि वे चिंतित हैं कि यदि वे जो कुछ हुआ उसकी पुष्टि करते हैं और किसी तरह यीशु को मसीहा के रूप में समर्थन करते हैं तो उन्हें आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाएगा।

फरीसी माता-पिता से कहते हैं, क्या यह तुम्हारा पुत्र है? और वे कहते हैं, हाँ, यह वही है। क्या वह अंधा पैदा हुआ था? हां। तो, वे यह सब स्वीकार करते हैं।

हम जानते हैं कि वह जन्मांध था। लेकिन श्लोक 21 में, हम अपनी गर्दन बाहर नहीं निकालेंगे और इस बारे में बात नहीं करेंगे कि वह अब कैसे देखने में सक्षम हो गया है। तुम्हें उससे पूछना होगा।

वह उम्र का है। वह वयस्क है। तो, उससे पूछो।

वह अपने लिए बोलेंगे। इसलिए, श्लोक 22 संपादकीय में बताता है कि जो कुछ हुआ था उसकी पुष्टि करने में माता-पिता इतने अनिच्छुक थे, इसका कारण यह था कि वे यहूदी नेताओं से डरते थे जिन्होंने पहले ही तय कर लिया था कि जो कोई भी यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करेगा उसे आराधनालय से बाहर कर दिया जाएगा। यह एक ऐसा विषय है जिसे हमने पहले देखा है और जिसे हम जॉन में फिर से देखेंगे।

तो अब हम पद 24 में तीसरी बार फिर से जा रहे हैं। पहले पड़ोसियों के साथ, अब एक बार फरीसियों के साथ, और अब दूसरी बार फरीसियों के साथ। तो, कुल मिलाकर तीन बार, इस आदमी को अपनी कहानी बताने के लिए बुलाया जा रहा है।

सो उन्होंने कहा, सच बोलकर परमेश्वर की महिमा करो। हम जानते हैं कि यह आदमी पापी है। मुझे यकीन नहीं है कि वे उससे क्या कहना चाहते थे।

मुझे लगता है कि वे चाहते थे कि वह यह कहे कि उसके साथ जो हुआ वह वास्तव में नहीं हुआ था या वे चाहते थे कि वह इसका श्रेय सीधे ईश्वर को दे, न कि यीशु को। यह जानना कठिन है कि वे यहां क्या कहना चाह रहे थे। वास्तव में यह अतार्किक लगता है।

तो, यहीं पर कहानी थोड़ी मज़ेदार हो जाती है। परमेश्वर की महिमा करो। हम जानते हैं कि यह आदमी पापी है।

उसने उत्तर दिया, ठीक है, श्लोक 25, वह पापी है या नहीं, मैं वास्तव में नहीं जानता, लेकिन एक बात जानता हूँ और वह यह है कि मैं अंधा था। अब मैं देख सकता हूँ। तो, उन्होंने उससे फिर पूछा, पद 26, उसने क्या किया? उसने तुम्हारी आँखें कैसे खोलीं? और वह आदमी कहता है, वह तो मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ।

आप टेलीविज़न पर इनमें से कुछ नाटक देखते हैं और उनमें यह बात होती है कि वकील उछल पड़ते हैं और आपत्ति जताते हैं और वे कहते हैं, पूछा और उत्तर दिया। खैर, यह पहले ही पूछा जा चुका है। इसका उत्तर पहले ही दिया जा चुका है।

तो फिर हमें इसे दोबारा क्यों दोहराना है? तो, मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ और तुमने मेरी बात नहीं सुनी। श्लोक 27. आप इसे दोबारा क्यों सुनना चाहते हैं? तो, यहाँ बढ़िया हिस्सा है।

क्या आप भी उनके शिष्य बनना चाहते हैं? तो यहाँ आपके पास वह आदमी है जो मूल रूप से उनसे चिपका हुआ है और बाजी पलट रहा है। तो, श्लोक 28 में, वे उस पर पलटवार करते हैं और कहते हैं, तुम इस व्यक्ति के शिष्य हो। हम मूसा के शिष्य हैं।

तो, यहां जॉन में एक महत्वपूर्ण विषय है जो प्रस्तावना तक जाता है जहां प्रस्तावना हमें बताती है कि वास्तव में कानून मूसा द्वारा आया था जो व्यवस्थाविवरण, निर्गमन 33, 34 में भगवान की महिमा देखना चाहता था, और उसे देखने को नहीं मिला यह पूरी तरह से यीशु के विपरीत है जो मानवता के लिए ईश्वर की कृपा और सच्चाई की परिपूर्णता लाता है। ऐसा नहीं है कि मूसा बुरा है, लेकिन मूसा यीशु की प्रतीक्षा करता है जो हमारे लिए परमेश्वर के रहस्योद्घाटन की संपूर्णता लाता है। इसलिए वे यीशु और मूसा के बीच द्वंद्व रखना चाहते हैं।

हम जॉन से पहले से ही जानते हैं कि जॉन चाहता है कि हम विश्वास करें कि यीशु ही परम, परम मूसा है, आप कह सकते हैं, मूसा की पूर्ति, जिसकी मूसा ने आशा की थी। यह निश्चित रूप से जॉन अध्याय पांच में एक महत्वपूर्ण मामला है जब यीशु कह रहे हैं कि मूसा मेरे बारे में गवाही देता है और यदि आपने उस पर विश्वास किया होता, तो आप मुझ पर विश्वास करते। तो, हम मूसा के शिष्य हैं।

खैर, यीशु के अनुसार नहीं क्योंकि मूसा वह व्यक्ति था जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। हम जानते हैं कि भगवान ने इस व्यक्ति के बारे में मूसा से बात की थी, आप उनकी आवाज़ में लगभग

कड़वाहट सुन सकते थे, यह व्यक्ति, हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आता है। तो, आदमी अपमान से विचलित नहीं होने वाला है, जो कुछ हुआ उसके लिए वह खड़ा रहेगा और साथ ही वह इस बिंदु पर इसे समझता है।

तो, श्लोक 30 में वे कहते हैं, अब यह एक उल्लेखनीय बात है। आप नहीं जानते कि वह कहाँ से आता है, फिर भी उसने मेरी आँखें खोल दीं। हम जानते हैं कि ईश्वर पापियों की नहीं सुनता, वह उन धर्मात्मा व्यक्तियों की सुनता है जो उसकी इच्छा पूरी करते हैं।

किसी ने भी जन्म से अंधे आदमी की आँखें खोलने की बात नहीं सुनी है। यह आदमी परमेश्वर का नहीं था, वह यह नहीं कर सकता था, वह कुछ नहीं कर सकता था। यह कुछ हद तक एक व्यावहारिक तर्क है, मुझे लगता है कि दार्शनिक इसमें छेद कर सकते हैं, यह शायद पूरी तरह से तार्किक नहीं है, लेकिन वह आदमी एक बार फिर कह रहा है, मैं सिर्फ यह एक बात जानता हूँ, मैं अंधा था, लेकिन अब मैं देख सकता हूँ .

इस पर उन्होंने उत्तर दिया, एक और विशेषण, आप जन्म के समय पाप में डूबे हुए थे। उस गलतफहमी की ओर लौटते हुए जिसके बारे में शिष्य यीशु से अध्याय के श्लोक 2 में पूछ रहे थे, यीशु ने उत्तर दिया कि वह व्यक्ति ईश्वर की महिमा करने के लिए अंधा पैदा हुआ था। इसलिए फरीसी इस विचार को स्वीकार कर रहे हैं कि उसका अंधापन पाप के कारण था।

आप अंधे पैदा हुए थे, आप पापी रहे होंगे, आप जन्म के समय पाप में डूबे हुए थे, आपकी हमें उपदेश देने की हिम्मत कैसे हुई? आप कौन हैं? इसलिए, हम कानून के बारे में आम लोगों की समझ के बारे में नेता के संदेह पर वापस जा रहे हैं। पहले के पाठ में उस देश के उन लोगों के शापित होने का उल्लेख था जो कानून नहीं जानते थे। इसलिए उन्होंने उसे बाहर फेंक दिया, पद 34 निष्कर्ष है।

तो, कहानी तब काफी महत्वपूर्ण बिंदु पर आती है जहां इस आदमी को धार्मिक नेताओं द्वारा पूरी तरह से त्याग दिया गया है, और यहां तक कि उसके अपने माता-पिता भी उसकी सहायता के लिए नहीं आए हैं, और वे अभी भी अपने आराधनालय के रिश्ते में सहज और आरामदायक हैं क्योंकि वे ऐसा करेंगे। 'टी, लेकिन यह आदमी जिसने बस फरीसियों को बताया कि क्या हुआ था और उनके स्पष्टीकरण को स्वीकार नहीं किया, उसे बाहर निकाल दिया गया है। तो मुझे लगता है कि यहीं पर अध्याय कोमल हो जाता है, और जहां हम यीशु को आत्माओं का चरवाहा होते हुए देखते हैं और यह अनुमान लगाते हैं कि हम अध्याय 10 में उसके बारे में क्या पढ़ने जा रहे हैं। यीशु ने सुना कि उन्होंने उसे बाहर फेंक दिया था, श्लोक 35, उससे पूछता है, उसे ढूँढ़ता है, और पाता है, और कहता है, क्या तू मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करता है? वह आदमी ईमानदारी से कहता है, ठीक है, मैं यह भी नहीं जानता कि वह कौन है, इसलिए मुझे बताओ कि वह कौन है ताकि मैं उस पर विश्वास कर सकूँ।

याद रखें इस आदमी ने कहा था कि यीशु एक भविष्यवक्ता था, यीशु के साथ कुछ ऐसा चल रहा था जो असामान्य था, लेकिन उसे वास्तव में समझ नहीं आया कि क्यों। तब यीशु ने यह कहते हुए उत्तर दिया, तुमने अब उसे देखा है, और वास्तव में, वह अब तुमसे बात कर रहा है। दूसरे शब्दों

में, यह मैं हूँ, और बिना किसी हिचकिचाहट के, उस आदमी ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, और उसने उसकी पूजा की।

यह हमें अध्याय के समापन के रास्ते पर लाता है, जो मुझे लगता है कि इस सब का धार्मिक पाठ है। तो, यीशु कहते हैं, न्याय के लिए, मैं इस दुनिया में आया हूँ ताकि अंधे देख सकें और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएं। किसी न किसी तरह, जैसा कि यहां कहानी बताई जा रही है, फरीसी इस वार्तालाप के चारों ओर घूम रहे थे, और वे किसी तरह से जानते थे कि यीशु ने क्या कहा था।

सो जो फरीसी उसके संग थे, उन्होंने उसे यह कहते हुए सुना, और पूछा, क्या? क्या हम भी अंधे हैं? यीशु ने कहा, यदि तुम अंधे होते तो पाप के दोषी नहीं होते, परन्तु अब जब तुम दावा करते हो कि तुम देख सकते हो, तो तुम्हारा अपराध बना रहता है। तो, यहाँ यह विडम्बनापूर्ण स्थिति है कि जिनके पास इज़राइल की निगरानी है, इज़राइल के नेताओं के पास कोई दृष्टि नहीं है। वे वास्तव में इसे समझ नहीं पाते, भले ही वे शारीरिक रूप से देखने में सक्षम हों।

वे देख सकते हैं कि इस आदमी के साथ क्या हुआ है जो पहले अंधा था। उनके पास कई गवाह हैं जो बताते हैं कि वह पहले अंधा था और अब देख सकता है। तो, उनके पास दृष्टि है और उनके पास निरीक्षण है, लेकिन वास्तव में उनके पास क्या हो रहा है इसके बारे में कोई आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि नहीं है।

यह आदमी जो अंधा था और जो अब शारीरिक रूप से देखने में सक्षम हो गया है, और उसके साथ ऐसा होने के कारण उन लोगों ने उसे बाहर निकाल दिया है जो कथित तौर पर देख सकते हैं, अब वह वास्तव में एक से अधिक तरीकों से देख सकता है। तो ये है कहानी. यह एक बहुत ही दिलचस्प कहानी है, जिस पर हम सिर्फ एक कहानी के रूप में, साहित्य के एक टुकड़े के रूप में ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

यह बहुत दिलचस्प है, लेकिन हमें कहानी के विकास के कुछ तरीकों और विषयगत चीजों पर ध्यान देने की जरूरत है, जो यहां हमारा ध्यान आकर्षित करने की जरूरत है। सबसे पहले, हम अध्याय 8 के अंत में वापस जाना चाहते हैं और अध्याय 9 और अध्याय 8 में जो हुआ है उसके बीच परिवर्तन पर ध्यान देना चाहते हैं। जैसे ही अध्याय 8 समाप्त होता है, यीशु यहूदी लोगों के साथ बहुत गर्मजोशी से बातचीत कर रहे हैं जो कुछ में हैं सेंस ने उस पर विश्वास किया लेकिन वास्तव में उस पर उस अर्थ में विश्वास नहीं किया जैसा वह चाहता था। तो वे उस पर पत्थरवाह करने को तैयार हैं, क्योंकि उस ने इब्राहीम के पैदा होने से पहले ही कहा था, इब्राहीम के पैदा होने से भी पहले, मैं हूँ।

इस पर उन्होंने उस पर पथराव करने के लिये पत्थर उठा लिये, परन्तु यीशु स्वयं मन्दिर के मैदान से खिसक गया। उसने खुद को छिपा लिया. वह वहां से निकल गया.

यीशु का यह कृत्य कुछ दिलचस्प है. हमें आश्चर्य है कि क्या यह कुछ मायनों में पुराने नियम के समय में मंदिर से भगवान की महिमा, शकीना के प्रस्थान की प्रतिध्वनि हो सकती है। तो, यीशु ने

कहा है, मैं हूँ, ईश्वर की ओर इशारा करते हुए, मैं वह हूँ, स्पष्ट रूप से यशायाह की पुस्तक को निरस्त करने पर जोर दिया।

तो जैसे ही यीशु इस अभिव्यक्ति का उपयोग करने के बाद मंदिर से प्रस्थान करते हैं मैं हूँ, बहुत अच्छी तरह से हो सकता है कि यह जॉन के लिए हमें सूक्ष्मता से याद दिलाने का एक तरीका है कि कैसे भगवान की महिमा मंदिर से चली गई जैसा कि यहजेकेल की पुस्तक में कई अंशों में वर्णित है जैसे ही ईजेकील ने देखा कि भगवान की महिमा धीरे-धीरे मंदिर से दूर जा रही है। शायद मैथ्यू 23 जैसे ग्रंथों में सिनॉटिक परंपरा में भी कुछ है, जहां इज़राइल पर संकटों की घोषणा करने और विशेष रूप से छंद 20, अध्याय 23, छंद 37-39 में यरूशलेम के भविष्य पर शोक व्यक्त करने के बाद, यीशु फिर से मंदिर से बाहर निकलते हैं। और मैथ्यू 24 की शुरुआत में पूछा गया है, क्या यह एक खूबसूरत जगह नहीं है? और वह समझता है, ठीक है, यह है, लेकिन यह सब नष्ट हो जाएगा। तो यहां कुछ प्रतिध्वनि हो सकती है, हमें यह सोचने के लिए मजबूर करने में कुछ जानबूझकर कि किस तरह पहले मंदिर के दिनों में भगवान के खिलाफ इज़राइल का विद्रोह दूसरे मंदिर के दिनों में फिर से दोहराया गया है।

यहाँ अध्याय 8 में एक और बात जो संभवतः याद दिलानी चाहिए क्योंकि यह अध्याय 9 से जुड़ी है वह यह है कि यीशु ने अध्याय 8, श्लोक 12 में कहा है, उस अध्याय के मुख्य भाषण की तरह, मैं दुनिया की रोशनी हूँ। जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। तो, अंधकार और प्रकाश की पृष्ठभूमि निश्चित रूप से हमें यह समझने के लिए तैयार करती है कि अध्याय 9, श्लोक 5 में इस आदमी के साथ क्या हो रहा है जो अंधा पैदा हुआ है, फिर भी उसका अंधापन भगवान की महिमा करने वाला है।

ध्यान दें कि यीशु ने अध्याय 9 में शिष्यों को समझाया कि वह आदमी पापी नहीं था, बल्कि परमेश्वर की महिमा करने वाला था। यीशु अध्याय 9, श्लोक 5 में कहते हैं, जब तक मैं दुनिया में हूँ, मैं दुनिया की रोशनी हूँ, जो कि अध्याय 8, श्लोक 12 में उन्होंने पहले ही कहा था, उसकी पुनरावृत्ति है। और, निश्चित रूप से, मुझे लगता है कि यह लिंक है अध्याय 8, श्लोक 50 से लेकर अध्याय 9 में क्या चल रहा है, इसकी कल्पना भी।

अध्याय 8, श्लोक 50 में, यीशु कहते हैं, मैं अपने लिए महिमा नहीं चाह रहा हूँ। एक है जो इसकी खोज करता है, और वही न्यायाधीश है। जो कोई मेरे वचन पर चलेगा, वह कभी मृत्यु को न देखेगा।

तो, मुझे लगता है, यह जॉन अध्याय 9 में जो कुछ चल रहा है उसके लिए कुछ दिलचस्प वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। इसके अलावा, हमारे पास जॉन में सिलोम के पूल का पहला प्रत्यक्ष संदर्भ है। हम पहले ही जॉन 7, 37 से 39 की पृष्ठभूमि की अपनी चर्चा में इसका थोड़ा उल्लेख कर चुके हैं, लेकिन हम इसे यहां पहली बार देखते हैं। इसलिए, यदि आपने अभी तक उस व्याख्यान पर ध्यान नहीं दिया है, तो हम कुछ स्लाइड्स फिर से दिखाएंगे जो हम वहां पहले ही दिखा चुके हैं, और हम इसे कुछ हद तक जल्दी से देखेंगे।

हमें यरूशलेम में पिछले कई वर्षों में डेविड शहर के दक्षिणी क्षेत्र में एक और बड़े पूल की हालिया खोज मिली है। और इसलिए आज अधिकांश लोग सोचते हैं कि उन्हें अंततः सिलोम के पूल का वास्तविक स्थान मिल गया है। डेविड के पुराने नियम-युग के शहर में टेम्पल माउंट के दक्षिण में, हमारे पास सिलोम का पूल है, जो इस मानचित्र में हम इस समय दिखा रहे हैं, वे बस अनुमान लगा रहे थे और इसे यहीं रख रहे थे, यह प्रकाश क्षेत्र वो नक्शा।

हाल की खोज, निश्चित रूप से, इसे डेविड के पुराने शहर के अंत में मंदिर के दक्षिणी प्रवेश द्वार से आगे दक्षिण में स्थापित करेगी। तो, मंदिर के दक्षिणी छोर से लेकर शहर के निचले हिस्से तक। पहले, जो साइट उन्हें मिली थी वह हाल ही में मिली साइट से बहुत दूर नहीं है, यानी, ज्यादातर लोग सोचते हैं, बिल्कुल यही।

इसलिए, जो पर्यटक इज़राइल जाते थे उन्हें यह विशेष स्थल दिखाया जाता था। हालाँकि, यह साइट स्पष्ट रूप से पहली सदी की साइट नहीं है। और अब उन्हें यह विशाल स्थापना मिली है जिसमें ये पत्थर की सीढ़ियाँ हैं जो एक बहुत बड़े तालाब में उतरती हैं।

और जिस एक तरफ की खुदाई की गई है वह 156 फीट लंबी है। इसलिए, यह वहाँ एक बहुत बड़ा इंस्टालेशन है। और जैसा कि आप देख सकते हैं, हेरोडियन काल की अधिकांश मूल चिनाई अभी भी वहाँ मौजूद है।

आज फिर बहुत से लोग यहाँ से गुजर रहे हैं। यदि आप इज़राइल में हिजकिय्याह की सुरंग यात्रा पर जाते हैं, तो आप वापस यहीं आएँगे और कुछ सीढ़ियाँ नीचे आकर यहाँ से चलने में सक्षम होंगे। यहाँ एक सीवर पाइप है।

मुझे लगता है कि वास्तव में इसी तरह से उन्होंने इन खंडहरों की खोज की जब वे एक आधुनिक सीवर स्थापना का काम कर रहे थे और व्यवसाय की देखभाल करने की कोशिश कर रहे थे। और यह इज़राइल में हर समय होता है जहाँ वे एक राजमार्ग का निर्माण कर रहे हैं या एक नए अपार्टमेंट भवन या कुछ और के लिए नींव खोद रहे हैं और उन्हें प्राचीन अवशेष मिल रहे हैं। तो, इस तरह यह सब हुआ।

एक और तस्वीर यह है कि एक बार उन्होंने प्राचीन काल के सभी टूटे हुए पत्थरों को लकड़ी से ढक दिया था ताकि लोग वहाँ से गुजर सकें। और वहाँ एक तख्ती है जो आपको बचे हुए अवशेषों को दिखा रही है और आपके लिए इसकी व्याख्या कर रही है। प्लेकार्ड आपको 2 किंग्स अध्याय 20, राजा हिजकिय्याह की जल स्थापना में इसे वापस बांधने के बारे में थोड़ा दिखाता है।

ऐसा नहीं है, लेकिन शायद हिजकिय्याह की स्थापना इस बाद के पूल की पृष्ठभूमि थी जो हेरोडियन काल से आती है। कलाकारों ने यह सोचने का प्रयास किया है कि पूरी चीज़ कैसी दिखती होगी। पूल में नीचे उतरने की सीढ़ियों के साथ कुछ इस प्रकार।

कुछ वर्ष पहले के बाइबिल पुरातत्व समीक्षा लेख से इसका एक और प्रतिपादन। और एक अन्य छवि जो मुझे विकिपीडिया साइट से ऑनलाइन मिली। ये सब दर्शाते हैं कि मुझे लगता है कि यह पूल पुराने समय में कैसा दिखता होगा, इसका एक अच्छा विचार है।

तो, फिर भौगोलिक सेटिंग और पाठ के कुछ भौतिक संदर्भात्मक भागों से वापस पाठ और उसके धार्मिक विचारों की ओर बढ़ते हैं। पूरा पाठ इस विचार पर केन्द्रित प्रतीत होता है कि पाप आपके साथ होने वाली बुरी चीजों का कारण है। इस मामले में, अंधापन।

यह स्पष्ट रूप से एक बारहमासी समस्या है जिसे मानवता समझने की कोशिश करती है और इसके बारे में लिखने की कोशिश करती है। कुछ समय पहले हमारी एक किताब आई थी, अच्छे लोगों के साथ बुरी बातें क्यों होती हैं। इसके विपरीत भी एक समस्या है।

बुरे लोगों के साथ अच्छी चीजें क्यों होती हैं? तो अधर्मी लोग क्यों समृद्ध होते हैं? भगवान को कष्ट क्यों हो रहा है? इसलिए, जब हम इसे धर्मग्रंथ के प्रकाश में समझने की कोशिश करते हैं, तो हम इसे कभी-कभी नोटिस करते हैं, और यहां कभी-कभार शब्द पर जोर दिया जाता है। क्या मैं इसे फिर से कहूं? कभी-कभी, धर्मग्रंथ लोगों के पाप, ईश्वर के प्रति उनके विद्रोह के परिणामस्वरूप आने वाली बीमारी, पाप और त्रासदी के बारे में बात करते हैं। तो, शास्त्र में इसके मामले हैं।

हमने हाल ही में एक देखा है जहां स्पष्ट रूप से जैसा कि हमने जॉन अध्याय 5 में उस लकवाग्रस्त व्यक्ति के बारे में पढ़ा था जिसे यीशु ने बेथेसडा के पूल में ठीक किया था, जो कि मंदिर परिसर के दूसरे छोर पर, उत्तरी तरफ एक अलग पूल था, यीशु ने इस आदमी से कहा था, अब और पाप मत करो। तो यह शायद इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि उसकी बीमारी का लकवाग्रस्त होने से पहले उसके अनैतिक व्यवहार से कुछ लेना-देना था। वहां कुछ चल रहा था।

1 कुरिन्थियों अध्याय 11 में पॉल ने कुरिन्थियों से कुछ चीजों के बारे में बात की जो प्रभु की मेज के दुरुपयोग के कारण उनके साथ घटित हुई होंगी। जेम्स अध्याय 5, जब वह किसी बीमार व्यक्ति के लिए अभिषेक और प्रार्थना करने वाले बड़ों की बात करता है, तो इसका संकेत मिलता है। संभावना है कि बीमारी का पाप से कुछ लेना-देना हो सकता है और शायद इस प्रकार की स्थितियों में पाप स्वीकार करना ज़रूरी है। तो फिर, कभी-कभी बीमारी या त्रासदी और पाप के बीच कुछ संबंध होता है।

इसके दूसरी ओर, कभी-कभी घोर पापी भी समृद्ध होते हैं। यह उन समस्याओं में से एक है जिस पर एक्लेसिएस्टेस के उपदेशक कोहेलेट विचार कर रहे हैं। वह यह समझने की कोशिश कर रहा है कि ऐसा क्यों है कि कभी-कभी जो लोग स्पष्ट रूप से ईश्वरीय होते हैं वे एक अच्छा जीवन बनाते हैं और अचानक वह उनसे छीन लिया जाता है।

दूसरी ओर, जो लोग अधर्मी हैं वे समृद्ध हो रहे हैं। हम इसे कैसे समझें? एक्लेसिएस्टेस में इसके बारे में कुछ बार कहा गया है। मुझे लगता है कि नीतिवचनों में भी ऐसे पाठ हैं जो इस बारे में सवाल उठाते हैं।

कभी-कभी, भजनहार यह जानना चाहता है कि ऐसा क्यों है कि जो लोग उसके पीछे हैं, जो अधर्मी हैं, वे उससे बेहतर कर रहे हैं। एक तरह से, हबक्कूक की किताब इस बात पर विचार कर रही है कि इजराइल के साथ उसके आसपास के अधर्मी राष्ट्रों से भी बदतर व्यवहार किया जा रहा है। यह पवित्रशास्त्र में एक बहुत ही सामान्य मुद्दा है।

कभी-कभी, हम पाप को समस्याओं से जोड़ सकते हैं। हालाँकि, धार्मिक लोग भी पीड़ित होते हैं। हमें अय्यूब से आगे जाने की जरूरत नहीं है।

निःसंदेह, प्रभु यीशु एक धर्मात्मा व्यक्ति थे और उनके साथ इतना बुरा व्यवहार किया गया जितना किसी भी इंसान के साथ कभी नहीं किया गया। स्वयं प्रेरित पौलुस इस प्रकार की बात की ओर संकेत करता है। उसके पास कुछ मुद्दे थे जिनसे वह पीड़ित था, विशेषकर अधिनियम 28 में रोम की यात्रा के दौरान।

जहाज़ की तबाही के बाद, आपको याद होगा, वे कुछ समय के लिए एक द्वीप पर फंसे हुए थे। वे गर्म होने के लिए आग जला रहे हैं। पॉल आग जलाने में मदद कर रहा है।

वह नीचे पहुंचता है और लकड़ी का एक टुकड़ा पकड़ लेता है और उसे सांप ने काट लिया है। बेशक, आस-पास के लोग कहते हैं, ठीक है, तुम वहाँ जाओ। उसके साथ ऐसा होने के लिए उसने जरूर कुछ गलत किया होगा।

तो, भगवान ने उसे इसके लिए पा लिया। उन्हें लगता है कि पॉल उस समय झुकने और मरने के लिए तैयार है। बेशक, पॉल को कुछ नहीं होता और पॉल ठीक है।

तो, फिर वे सोचते हैं कि पॉल के बारे में कुछ दिव्य होना चाहिए अन्यथा ऐसा नहीं हो सकता था। इसलिए, वे दोनों मामलों में गलत थे। इस तरह वे वास्तविकता की व्याख्या कर रहे थे।

पॉल, स्वयं, एक वास्तविक बीमारी के बारे में बात करता है जिससे वह 2 कुरिन्थियों 12 में निपटता है, उसके शरीर में रहस्यमय काँटा, जिसका वास्तव में कोई भी स्पष्ट अर्थ नहीं है, लेकिन स्पष्ट रूप से एक शारीरिक समस्या है जिसके बारे में पॉल कहता है कि भगवान ने इसमें रहने की अनुमति दी है उसका जीवन, भले ही उसने उसे इसे हटाने के लिए कहा था। पॉल कहते हैं कि भगवान ने मुझे इससे निपटने में सक्षम बनाया ताकि मैं उस पर भरोसा कर सकूँ, यह महसूस कर सकूँ कि जब मैं कमजोर था, तो मैं वास्तव में मजबूत था। ऐसा प्रतीत होता है कि पॉल यह कह रहा है कि यदि मुझे यह कष्ट नहीं हुआ होता, तो मैं उन सभी महान चीजों के कारण अत्यधिक घमंडी हो गया होता जो ईश्वर ने मुझे प्राप्त रहस्योद्घाटन में दिखाई थीं।

किसी भी स्थिति में, हमारे पास धर्मग्रंथों में ऐसी बहुत सी बातें चल रही हैं जो असंगत प्रतीत होती हैं। ऐसा कैसे है कि धर्मनिष्ठ लोग कष्ट सहते हैं? ऐसा कैसे है कि अधर्मी लोग समृद्ध होते हैं? इस दुनिया में हमारे पास आदम और हव्वा के पाप के परिणाम हैं, एक गड़बड़ दुनिया, एक टूटी हुई दुनिया, जहां चीजें हमेशा उस तरह नहीं होतीं जिस तरह उन्हें जाना चाहिए। यही वह चीज़ है जो हमें पवित्रशास्त्र में आशा का कारण देती है।

यदि वर्तमान दुनिया में सब कुछ ठीक होता, तो हमारे पास कोई युगांत विज्ञान नहीं होता। हमारे पास पहले से ही वह सब कुछ होगा जिसकी हमें आवश्यकता है। जाहिर है, हम नहीं करते।

मुझे लगता है कि इस सारे डेटा का नतीजा यह है कि यह हमें विचलित कर देता है और हमें आश्चर्यचकित करता है कि यहां दुनिया में क्या चल रहा है। ईश्वर ने इस दुनिया में जीवन को मिश्रित रूप से अस्त-व्यस्त रहने की अनुमति दी है ताकि जो लोग उसे जानते हैं वे उस पर भरोसा रखें और उस दिन की लालसा रखें जब हम प्रभु की प्रार्थना में प्रार्थना करते हैं जब ईश्वर का स्वर्गीय राज्य पृथ्वी पर आता है। हम अपने जीवन में इसे छोटे-छोटे टुकड़ों में धरती पर आते देखते हैं, लेकिन हमने इसे अभी तक पूरा नहीं देखा है।

हर बार जब हम अखबार पढ़ते हैं और किसी निर्दोष व्यक्ति की पीड़ा के बारे में पता लगाते हैं, तो हम और भी अधिक उत्साह से कहते हैं, आपका राज्य आए, आपकी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो जैसे स्वर्ग में होती है। इस बीच, हमारे पास यह मानने के लिए कोई बाइबिल आधार नहीं है, निश्चित रूप से यह सिखाने के लिए नहीं कि किसी भी पीड़ित व्यक्ति को पाप के लिए दंडित किया जा रहा है। अंधे आदमी के बारे में इस तरह की धारणा थी।

जब अंधे आदमी के तर्क ने फरीसियों को कोने में धकेल दिया, तो उनके पास उसके खिलाफ इस विशेषण का उपयोग करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था, आप हमें कुछ भी बताने वाले कौन होते हैं? आप पाप में पैदा हुए थे, अध्याय 9, श्लोक 34। हमारे पास ऐसा कुछ कहने के लिए कोई बाइबिल आधार नहीं है, न ही हमारे पास यह कहने के लिए कोई बाइबिल आधार है कि सिर्फ इसलिए कि एक व्यक्ति के पास बहुत पैसा है, सिर्फ इसलिए कि वे समृद्ध हो रहे हैं, कि उन्हें धर्मी होना चाहिए, या कि भगवान किसी तरह उन्हें उनके पुण्य के लिए पुरस्कृत कर रहे हैं। यह वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है जिसके बारे में हम वैश्विक बयान दे सकें।

इस अध्याय के आधार पर, हमारे पास यह विश्वास करने का हर कारण है कि ईश्वर स्वयं को गौरवान्वित करने के लिए मानवीय पीड़ा की अनुमति देता है। यहाँ अध्याय 9 में अंधे आदमी के साथ यही हो रहा है, और मुझे लगता है कि अध्याय 11 में लाज़रस के साथ भी यही हो रहा है। क्योंकि जब यीशु को पता चलता है कि लाज़र बीमार है और मरने वाला है, तो वह तुरंत मैरी, मार्था और लाज़र को अतिरिक्त दर्द से बचाने के लिए नहीं जाता है।

वह चमत्कार करने के लिए बीमारी को मृत्यु की ओर बढ़ने देता है। इसलिए, हम यहाँ यूहन्ना 9 में जिस बारे में बात कर रहे हैं, उसके साथ अध्याय 11, पद 4 को जोड़ना दिलचस्प है। जब यीशु ने सुना कि लाज़र बीमार है, तो उसने यूहन्ना 11, पद 4 में कहा, यह बीमारी मृत्यु में समाप्त नहीं होगी। खैर, यदि आप इसे संदर्भ से बाहर ले जाएं, तो यीशु गलत था क्योंकि लाज़र मर गया था।

हालाँकि, बड़ी तस्वीर में, यीशु ने जीवन और मृत्यु और उस पर विश्वास के बारे में गहरा सबक सिखाने के लिए लाज़र को मृतकों में से जीवित कर दिया। तो, यह बीमारी मृत्यु में समाप्त नहीं होगी, नहीं। यह परमेश्वर की महिमा है ताकि इसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।

तो, उस अर्थ में, मुझे लगता है कि यहां जॉन अध्याय 9 और शुरुआती छंदों में क्या चल रहा है, यह अनुमान लगाता है कि जॉन 11 के शुरुआती छंदों में क्या चल रहा है। तो हम दूसरे विषय पर आगे बढ़ते हैं जो हमें यह समझने में मदद करता है कि जॉन में क्या चल रहा है, और हम इससे कुछ हद तक भ्रमित हैं, जिस तरह से यीशु इस आदमी को ठीक कर रहे हैं। तो आप उस तरीके

के बारे में सोचें जिस तरह से यीशु ने जॉन में लोगों को ठीक किया था, उस समय की बात है जब उन्होंने गलील के काना में शाही अधिकारी के बेटे को ठीक किया था।

उसने दूर से ही इस युवक को ठीक कर दिया। उसने उसे ठीक किया। वह कफरनहूम में रह रहा था।

यीशु काना में थे। यीशु ने काना में अपने उपचार की घोषणा की, बीमार व्यक्ति के विश्वास के कारण नहीं, बल्कि उसके पिता के विश्वास के कारण। फिर हमारे पास अध्याय 5 में है, यीशु ने बेथेस्टा के तालाब में लकवे के रोगी को ठीक किया।

इस व्यक्ति को सहानुभूतिपूर्ण तरीके से चित्रित नहीं किया गया है। हमारे पास इस बात पर विश्वास करने का कोई वास्तविक कारण नहीं है कि वह आस्थावान व्यक्ति थे। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने सोचा था कि देवदूत पानी को हिला देंगे और अगर पानी का प्रवाह बंद होने से पहले वह किसी तरह पानी में घुस जाए तो वह ठीक हो जाएगा।

इसलिए, विश्वास का उपचार के साथ एक अस्पष्ट संबंध है। इसलिए, अध्याय 11 में, जब यीशु लाजर को ठीक करने जा रहे हैं, हम अभी तक वहां नहीं पहुंचे हैं। वह जल्द ही आ रहा है।

क्या आप कहेंगे कि मरियम और मार्था को निश्चित रूप से विश्वास था कि यीशु लाजर को ठीक करने जा रहे हैं? स्पष्ट रूप से नहीं। जाहिरा तौर पर, जब यीशु ने कहा कि वह पुनर्जीवित हो जाएगा, तो उस समय के अच्छे यहूदी लोगों ने सोचा होगा, हाँ, वह अंतिम न्याय के अंतिम दिन पुनरुत्थान के समय पुनर्जीवित हो जाएगा। यही उनका विश्वास था।

उन्होंने वास्तव में यह नहीं सोचा था कि यीशु उस समय उसे ठीक करने ही वाला था। इसलिए, विश्वास और उपचार आज अक्सर जुड़े हुए हैं। हमारे पास ऐसे लोग हैं जिन्हें हम आस्था उपचारक कहते हैं।

शायद हम उनके प्रदर्शन पर संदेह कर रहे हैं, लेकिन विश्वास और उपचार अक्सर जुड़े होते हैं। यीशु के कुछ उपचारों में, यह वास्तव में है, लेकिन जॉन के सुसमाचार में ऐसा नहीं है। तो, यीशु इस अंधे आदमी के साथ काम कर रहे हैं और वह विश्वास के बारे में उससे सीधे बात नहीं करते हैं।

इसके बजाय, वह कुछ ऐसा करता है जो हमें बहुत अजीब लगता है। वह थूक का प्रयोग करता है। इसलिए वह झुकता है और थूक के साथ गंदगी मिलाता है और थोड़ी सी मिट्टी या कीचड़ बनाता है और उसे उस आदमी की आंखों में डालता है और उसे ठीक होने के लिए बेथेस्टा के तालाब में जाने, इसे धोने और ठीक होने के लिए कहता है।

उपचार में थूक का उपयोग यहां जॉन 9 में अद्वितीय नहीं है। यह कुछ ऐसा है जो यीशु ने मार्क 7 और मार्क 8 में भी किया था। जैसा कि मुझे याद है, मार्क 7 एक उदाहरण है जहां एक व्यक्ति बहरा है और सुनने में अक्षम है और यीशु उसके कानों पर थूक देता है। मेरा मानना है कि मार्क 8 एक और जगह है जहां कोई व्यक्ति नहीं देख पाता है।

यदि आप ग्रीको-रोमन स्रोतों और यहूदी स्रोतों दोनों में थूक के बारे में बात करने वाले प्राचीन ग्रंथों को देखें, तो आपको ऐसे ग्रंथों का मिश्रण मिलेगा जो दिखाते हैं कि एक अंधविश्वास था कि थूक का कभी-कभी औषधीय महत्व होता है, लेकिन अन्य ग्रंथों में भी संकेत मिलता है कि थूक का हमेशा सकारात्मक अर्थ नहीं होता। मुझे क्षमा करें, मैं एक पेय ले लूँगा। यहूदी स्रोतों में थूक के प्रयोग के बारे में इसी प्रकार की मिश्रित समीक्षा मिलती है।

कुछ ग्रंथ ऐसे हैं जो इसके कुछ संभावित औषधीय महत्व के बारे में बात करते हैं, लेकिन ऐसे ग्रंथ भी हैं जो इसे धार्मिक अशुद्धता का मामला बताते हैं। जाहिर है, हम जानते हैं कि आज की तरह प्राचीन काल में भी किसी पर थूकना उनके प्रति और वे जो कह रहे हैं उसके प्रति पूरी तरह से अवमानना दिखाने का एक तरीका था। तो, यहाँ यीशु द्वारा थूक का उपयोग सिर खुजाने वाला है।

यह कुछ ऐसा है जिसे प्राचीन काल में या आज भी समझना आसान नहीं है। मुझे यह समझने में मदद करने के लिए सबसे अच्छी बात शायद यह है कि यीशु यहां जो कर रहा है वह एक तरह से आदम और हव्वा की रचना को फिर से दोहरा रहा है। उत्पत्ति 2 के अनुसार, ईश्वर ने मानवता को ज़मीन की धूल से, कीचड़ से बनाया।

तुम धूल से मिट्टी में आए हो, तुम वापस लौटोगे, तुम्हें याद होगा बाइबल कहती है। शायद यीशु एक अर्थ में निर्माता हैं। हम जॉन 1 से जानते हैं कि वह वास्तव में मूल निर्माता है।

शायद वह इस प्रतीकात्मक कार्य द्वारा इस आदमी की दृष्टि को पुनः निर्मित कर रहा है। यह शायद प्रश्न का प्रेरक या पूरी तरह से संतोषजनक उत्तर नहीं है, लेकिन इस समय मेरे पास यह सबसे अच्छा है और मैं अभी भी इसके बारे में सोचने और समझने की कोशिश कर रहा हूँ। तो शायद यीशु यहाँ उत्पत्ति 2 पर दोबारा गौर कर रहे हैं।

शायद यीशु केवल उस व्यक्ति के विश्वास की परीक्षा ले रहा है क्योंकि वह कुछ ऐसा कर रहा है जो कुछ मायनों में एक बहुत ही अजीब बात है और मुझे नहीं पता, यह कोई सुखद बात नहीं है जिसे आपकी आँखों में देखा जा सके। गंदगी और थूक एक साथ मिल गए। जाकर सिलोअम के कुण्ड में धो लो।

तो, उस आदमी ने मन ही मन कुछ सोचा होगा। मुझे नहीं पता कि यह आदमी कौन है या वह ऐसा क्यों कर रहा है। शायद उसने बस व्यावहारिक रूप से सोचा कि मुझे क्या खोना है? शायद उसने सोचा कि यहाँ वास्तव में कुछ चल रहा है और उसे यीशु पर विश्वास होना शुरू हो गया था।

कौन जानता है? परन्तु उस ने यीशु को अपनी आँखों में मिट्टी लगाने की आज्ञा दी, और वह अन्धे के समान नीचे चला गया। सिलोआम के तालाब में जाना कठिन रहा होगा और उसने धोया और जैसा कि पाठ में कहा गया है, उसने देखना शुरू कर दिया। पाठ के बारे में एक और दिलचस्प बात सिलोम के पूल में धोने का विचार है।

इसके पीछे हिब्रू शब्द एक ऐसा शब्द है जिसका संबंध भेजने से है। इसलिये शायद यीशु ने उसे तालाब में भेज दिया। वह भेजा गया था।

वह अपने मुद्दे का ध्यान रखने के लिए यीशु की ओर से एक मिशन पर था और इसलिए यह एक तरह का मजाक था, उसके जाने के लिए एक उपयुक्त जगह थी। हमें इसके बारे में यूहन्ना अध्याय 9 श्लोक 7 में बताया गया है। सिलोम के कुंड में नहाओ। संपादकीय टिप्पणी।

इस शब्द का अर्थ है भेजा हुआ। इसलिए, यीशु ने उसे उस तालाब के पास भेजा जहाँ लोग जाते हैं और इस तरह वह ठीक हो गया। जैसा कि हम इस आदमी के बारे में इस कहानी पर विचार करते हैं, जॉन अध्याय 5 में लकवाग्रस्त आदमी के साथ उसकी तुलना और तुलना करना दिलचस्प है जो एक अलग पूल, बेथेस्डा के पूल में ठीक हो गया था।

इन दोनों पाठों को एक साथ बांधना कुछ हद तक दिलचस्प है, समानताएं और अंतर दोनों। इसलिए, जब हम सब्बाथ के इन दो उपचारों की तुलना करते हैं, तो यूहन्ना 5 में व्यक्ति 38 वर्षों से लकवाग्रस्त था, पाठ हमें बताता है। मुझे नहीं लगता कि वहां संख्या 38 के बारे में कुछ भी प्रतीकात्मक है।

मुझे लगता है कि अपनी पीड़ा की गंभीरता को रेखांकित करने के लिए इसका मतलब यह है कि वह लंबे समय तक अपाहिज था। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो उसके साथ घटित हुई थी जो तुरंत दूर हो सकती थी, एक गुजरती हुई समस्या थी। यह एक दीर्घकालिक स्थिति है जिससे आदमी अपने जीवन के एक बड़े हिस्से से जूझ रहा है।

तो, यह एक गंभीर समस्या थी जो उस आदमी को थी, वह 38 वर्षों से लकवाग्रस्त था, लेकिन उतना गंभीर नहीं था जितना किसी ऐसे व्यक्ति के बराबर था जिसे कभी दृष्टि ही नहीं मिली थी, यह जन्मजात अंधापन था। इन दोनों मामलों में, यीशु पहल करते हैं। किसी भी मामले में वह व्यक्ति ठीक नहीं होता जो यीशु के पास आता है और ठीक होने के लिए कहता है।

यीशु उनके पास आते हैं, और वह पहल करते हैं, अन्य उपचारों के विपरीत जहां कोई आता है और उपचार मांगता है या यीशु से अपने बेटे को ठीक करने के लिए कहता है जैसा कि अध्याय 4 में अधिकारी के मामले में है। दोनों ही मामलों में, पिता के कार्यों को दिखाया जा रहा है अध्याय 5 के अनुसार यीशु। अध्याय 9 में, यीशु ने कहा कि जिसने मुझे भेजा है मुझे उसके काम करने चाहिए। यहाँ क्या हो रहा है इसके बारे में इसी तरह की टिप्पणियाँ। जिसने मुझे भेजा है वह अध्याय 9 में काम कर रहा है, पिता अध्याय 5 में काम कर रहा है। अध्याय 5 में, हालांकि वह आदमी पानी की तलाश में था, उसने सोचा कि अगर वह किसी तरह से कूद जाए, तो पानी में हलचल होने पर उसने सोचा एक स्वर्गदूत के द्वारा कि वह ठीक हो जायेगा।

हालाँकि, यीशु ने बिना पानी का उपयोग किए उसे ठीक कर दिया। यूहन्ना 9 में इस व्यक्ति को इस बात का बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था कि सिलोम का तालाब उसकी मदद करने में सक्षम है। वह पानी की तलाश में नहीं था, उसे सिलोम के तालाब के मूल्य का कोई अंदाज़ा नहीं था।

फिर भी, यीशु ने उसे सिलोम के तालाब में नहाने को कहा। इसलिए, दोनों खातों में पानी को लेकर हमारी स्थिति एक तरह से विपरीत है। दोनों खातों में, फरीसियों को इसके बारे में पता चला, उन्होंने यीशु की आलोचना की, और इसका सब्त के दिन से संबंध है।

तो, दोनों ही मामलों में एक बड़ी बहस छिड़ जाती है। अध्याय 5 के साथ-साथ अध्याय 9 में, यह पूरी घटना शिक्षण का विषय है और यीशु को अपने मिशन की प्रकृति को समझाने में मदद करती है। अध्याय 5 में, ठीक हुआ व्यक्ति ऐसा प्रतीत होता है जो फरीसियों के प्रति सहानुभूति रखता है, क्योंकि जब उसे पता चलता है कि यह यीशु ही था जिसने उसे ठीक किया था, तो वह जाता है और फरीसियों को बताता है।

तो, एक अर्थ में, वह वह व्यक्ति बन जाता है, जो, हम कहेंगे, यीशु पर फरीसियों को परेशान करता है। जैसा कि कहानी बताई गई है, वह एक तरह से उनके साथ जुड़ गया है। दूसरी ओर, अध्याय 9 में, अंधा आदमी फरीसियों से बिल्कुल भी जुड़ा नहीं है।

दरअसल, वह उनसे लगातार एक ही सवाल बार-बार पूछने के लिए उनका उपहास करता है। और निस्संदेह, वे उसे नाम से पुकारने की कोशिश करते हैं और वे उसे आराधनालय से बाहर निकाल देते हैं। तो, अध्याय 5 और अध्याय 9 में फरीसियों के साथ विपरीत संबंध। अध्याय 5 में आदमी, यीशु ने उससे जो कहा था उसके आधार पर, अब पाप मत करो जब तक कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा न हो, इसका मतलब यह हो सकता है कि वह आदमी एक पापी आदमी था और पक्षाघात का उससे कुछ लेना-देना था।

कम से कम, इसका तात्पर्य यह है कि यीशु उससे कह रहे हैं, बेहतर होगा कि तुम सीधे हो जाओ अन्यथा कुछ और बुरा हो सकता है। अध्याय 9 में इसके बारे में कुछ भी नहीं। यीशु ने पुष्टि की कि मनुष्य पापी नहीं था, और यह सब केवल परमेश्वर की महिमा के लिए हो रहा था। अध्याय 5 में इस लकवाग्रस्त व्यक्ति के आस्तिक बनने के बारे में कुछ भी नहीं है।

मौन से एक तर्क, मैं आपको स्वीकार करता हूँ, हम यहां किसी भी तरह से उसकी शाश्वत नियति को सौंपने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। कहानी से ही यह कहा जा सकता है कि उसके आस्तिक होने के बारे में कुछ भी नहीं है। हालाँकि, अध्याय 9 में, स्पष्ट रूप से, यह व्यक्ति न केवल एक आस्तिक बन जाता है, बल्कि एक अनुकरणीय आस्तिक बन जाता है, एक आस्तिक जिसका विश्वास अब विश्वास की प्रकृति के बारे में अध्याय 9 के अंत में काफी सबक सिखा रहा है।

ये दोनों, निस्संदेह, अध्याय 5 के संदर्भ में एक आगामी विवाद को जन्म देते हैं, यीशु उन सभी गवाहों के बारे में सिखा रहा है जो उसकी गवाही देते हैं। यहां अध्याय 9 में, संक्षिप्त सारगर्भित कथन स्थिति की विडंबना को दर्शाता है, कि जिनके पास महान अंतर्दृष्टि होने की उम्मीद की जाती है वे वास्तव में अंधे हैं। मुझे लगता है कि यह आदमी जो अंधा था, अब न केवल शारीरिक रूप से देख सकता है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी देख सकता है।

इस परिच्छेद का यह विडंबनापूर्ण निष्कर्ष है और हम अंधेपन के इस विचार पर समाप्त होते हैं कि इसका संबंध शारीरिक समस्या और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि दोनों से है। तो, यह आदमी जो अंधा है उसे दृष्टि प्राप्त होती है और धीरे-धीरे यीशु के बारे में अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। सबसे पहले, उसे एहसास हुआ कि यीशु एक भविष्यवक्ता है।

फरीसियों के साथ बहस के दौरान यीशु के बारे में उनकी चल रही टिप्पणियाँ, वह सोचते हैं कि वह एक अच्छे इंसान हैं, यहाँ कुछ अच्छा हो रहा है, और धीरे-धीरे जब यीशु उनके पास आते हैं और उनसे पूछते हैं कि क्या वह मनुष्य के पुत्र में विश्वास करते हैं, तो वह अपनी अज्ञानता व्यक्त करते हैं, वह यह भी नहीं जानता कि वह कौन है, लेकिन जब यीशु कहते हैं कि यह मैं हूँ, तो तुरंत वह स्पष्ट रूप से यीशु के सामने झुक जाता है, खुद को साष्टांग प्रणाम करता है, मुझे कहना चाहिए, और उसकी पूजा करता है। तो, यह आदमी जो अंधा है, एक आम आदमी है, अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है। फरीसी जो रुतबे वाले लोग हैं, जो लोग टोरा विशेषज्ञ हैं, वे लोग जिनके पास शारीरिक दृष्टि है, जिनके पास संस्कृति की सारी हैसियत और शक्ति है, कथित रूप से अंतर्दृष्टिपूर्ण फरीसियों को अंधा दिखाया गया है।

उनकी आँखें खुली हुई हैं, फिर भी उनके दिमाग परमेश्वर जो कर रहे हैं, यीशु में परमेश्वर के कार्यों के प्रति पूरी तरह से बंद हैं। तो, आँखें पूरी तरह खुली हों या आँखें पूरी तरह बंद हों, यही विरोधाभास है। जॉन के प्रकाश और दृष्टि के बारे में बात करने वाले अन्य पाठ भी इस पर प्रकाश डालने के लिए दिलचस्प हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे पास संपूर्ण बाइबिल धर्मशास्त्र है जिसे हम यहां ला सकते हैं, हालांकि हमारे पास इसकी गहराई में जाने का समय नहीं है। आप इनमें से कुछ अंशों को देख सकते हैं और स्वयं उनका अध्ययन कर सकते हैं कि कैसे देखना आध्यात्मिक धारणा का रूपक बन जाता है। शायद उन सभी का बीज पाठ जिसे हम बार-बार पढ़ते हैं और नए नियम में कई बार संदर्भित किया जाता है वह यशायाह 6 है, जिसका संबंध यशायाह के मिशन से है।

यशायाह ने भगवान को सिंहासन पर बैठा हुआ देखा और खुद को भगवान की सेवा के लिए खोल दिया। वह जायेगा, मुझे भेजो, मैं यहाँ हूँ, मुझे भेजो। तो, भगवान कहते हैं, ठीक है, लेकिन यशायाह के लिए उसका जो मिशन है वह निश्चित रूप से सुखद नहीं है।

यशायाह का मिशन बहुत सारे कठोर हृदय वाले लोगों से बात करना है। तो हमारे पास यशायाह 6 में यह पाठ है जो मैथ्यू 13 और अन्य सिनॉटिक परंपरा के साथ-साथ पूल की व्याख्या और बीज बोने वाले के दृष्टान्त में आता है। यह अधिनियम 28 में पॉल के मंत्रालय के अंत में भी होता है।

तो, यशायाह को क्या बताया जा रहा है? उनसे कहा जा रहा है कि भले ही लोग देख और सुन रहे हैं कि वह क्या कह रहे हैं, लेकिन वे वास्तव में इसे समझ नहीं पाएंगे। इसलिए भले ही वे देखते हों लेकिन वास्तव में उन्हें समझ नहीं आएगा कि क्या हो रहा है। यद्यपि वे सुनते हैं कि उसे क्या कहना है, वे इसे नहीं सुनेंगे।

वे वास्तव में समझ नहीं पायेंगे कि क्या हो रहा है। तो, यशायाह की किताब में भी यह एक बड़ी विडंबना का विषय है। और इसलिए, यह नए नियम में कई बार फिर से आता है।

तो, हमारे यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में पाँप संस्कृति में भी ऐसी कहावतें हैं और मुझे संदेह है कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी। कुछ दशक पहले, 1970 में, एक ऐसे व्यक्ति द्वारा एक पाँप गाना भी था, जिसने बहुत सारे हास्य गीत गाए थे, रे स्टीवंस, और इसका नाम था एवरीथिंग इज

ब्यूटीफुल इन इट्स ओन वे। और रे ने मूल रूप से यह कहने के लिए गीत लिखा था कि आपको अन्य लोगों के बारे में निर्णयात्मक नहीं होना चाहिए।

और यदि आप हैं, तो आपकी समस्या यह है कि आप इतने अंधे हैं कि आप उन अन्य चीज़ों का मूल्य नहीं देख सकते हैं जो आपके विश्वदृष्टिकोण में फिट नहीं बैठती हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि रे मूल रूप से गाने में नैतिक सापेक्षवाद सिखा रहे थे, गाने का समर्थन नहीं कर रहे थे। लेकिन हमने यह कहावत कई बार सुनी है कि उस व्यक्ति से ज्यादा अंधा कोई नहीं है जो देख नहीं सकता।

जो लोग अंधे बने रहना चुनते हैं, वे वास्तव में अंधे लोग होते हैं, न कि वे लोग जो शारीरिक रूप से अंधे होते हैं, जिनमें से कई बहुत ही बोधगम्य और बहुत सतर्क होते हैं और अपनी बौद्धिक उपलब्धियों के मामले में बहुत अच्छे होते हैं। तो अब हम बस एक पल के लिए सोचते हैं कि इस एक अंधे आदमी के बारे में पवित्रशास्त्र में इस घटना से निष्कर्ष निकालते हुए, यह हमें अंधे लोगों के बारे में क्या बताता है, जो लोग बाइबिल में दृष्टिबाधित हैं? यदि हम पुराने नियम पर वापस जाएं, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर अंधों की परवाह करता है। इज़राइल से कहा गया है कि वह उस व्यक्ति को श्राप दे जो किसी अंधे व्यक्ति का मज़ाक उड़ाता है या जो उन्हें राजमार्ग पर भटकाता है।

अध्याय 29 में अथ्यूब की पुस्तक में उसी प्रकार के मूल्य का संकेत है। भजन ईश्वर के बारे में बात करते हैं जो अंधों की आंखें खोलता है। आप इसके बारे में कुछ भविष्यसूचक पाठ देखते हैं, उनमें से यशायाह 35, जिसका उल्लेख संभवतः यीशु ने मैथ्यू अध्याय 11 में किया है, जब जॉन बैपटिस्ट को कैद किया गया है और यीशु से पूछता है, क्या मुझे किसी और की तलाश करनी चाहिए या आप चीज़ों को ठीक करने जा रहे हैं या नहीं? यीशु अंधों को देखने और सुनने में बहरे होने और मरे हुआओं में से जी उठने वाले लोगों और भाषा की ओर संकेत करते हैं जो संभवतः यशायाह अध्याय 35 की ओर संकेत कर रहे हैं।

तो भगवान अंधों की आंखें खोल देते हैं। इनमें से कुछ पाठ, आपको आश्चर्य होता है कि क्या वे ऐसे पाठ हैं जो शारीरिक अंधापन के बारे में हैं या क्या वह इज़राइल की आंखें खोल रहे हैं कि वह ईश्वर का अंतिम आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भविष्यवाणी कर रहा है। दूसरी ओर, हालांकि मैंने इन ग्रंथों को सूचीबद्ध नहीं किया है, यशायाह और अन्य भविष्यसूचक ग्रंथों में ऐसे ग्रंथ हैं जहां यह कहा गया है कि भगवान लोगों को उनके पाप के कारण अंधा कर देंगे और अंधापन एक न्याय है।

संभवतः उस अर्थ में, इतना अधिक नहीं कि ईश्वर वस्तुतः लोगों को अंधा बना देगा, बल्कि ईश्वर अनिवार्य रूप से उन्हें उनके पाप के कारण उनकी वास्तविकताओं से अंधा कर देगा। इसलिए हमारे पास कई ग्रंथ हैं जहां यीशु अंधे लोगों पर दया दिखा रहे हैं और उन्हें ठीक कर रहे हैं, मैथ्यू और मार्क समान रूप से। यह देखना दिलचस्प है कि पॉल के मिशन में अंधापन कैसे शामिल है।

प्रेरितों के काम अध्याय 13 में, अपनी पहली मिशन यात्रा पर, पॉल का सामना साइप्रस द्वीप पर एक व्यक्ति से होता है, मेरा मानना है, जिसका नाम एल यमास है। इस व्यक्ति को किसी प्रकार

के गुप्त व्यक्ति, किसी प्रकार के माध्यम या जादूगर के रूप में चित्रित किया गया है। इसलिए वह पॉल का विरोध कर रहे हैं।

तो, पॉल उसकी ओर देखता है, यह कहता है। दिलचस्प बात यह है कि यह प्रेरितों के काम 13 पद 9 में इस बात पर जोर देता है कि शाऊल आत्मा से भरा हुआ है और यह कहता है कि एलीमास को सीधे देखो, यदि तुम चाहो तो सीधे उसकी आँखों में देखो, और कहता है कि तुम सभी प्रकार के धोखे और चालाकी से भरे हुए हो। आप प्रभु के सही मार्ग को विकृत करना कभी बंद नहीं करेंगे।

अब यहोवा का हाथ तुम्हारे विरुद्ध है। आप कुछ समय के लिए अंधे हो जाएंगे, यहां तक कि सूर्य की रोशनी भी नहीं देख पाएंगे। तो, पाठ यह बताता है कि यह कैसे हुआ और इस कृत्य के पर्यवेक्षकों को इसके कारण भगवान पर विश्वास कैसे हुआ।

तो, यह जादूगर, एलीमास, परमेश्वर की चीज़ों के प्रति अंधा हो गया है और पॉल का विरोध करता है। तो, पॉल ने उसे अंधा कर दिया। उनकी शारीरिक स्थिति उनके आध्यात्मिक अंधेपन के लिए भी उपयुक्त है।

दूसरी ओर, जब पॉल अधिनियम 26 में मुकदमे में है और अग्रिप्पा के समक्ष अपना मामला पेश कर रहा है, तो वह एक विशेष तरीके से अपने मिशन को चित्रित करता है। वह कहता है कि ईश्वर ने उसे बुलाया है, ईश्वर ने उसे अपने ही लोगों के उत्पीड़न से बचाया है और वह अन्यजातियों से है और ईश्वर अब उसे आँखें खोलने और उन्हें शैतान की शक्ति से अंधकार से प्रकाश की ओर लाने के लिए भेज रहा है। परमेश्वर के पास, ताकि वे पापों की क्षमा पा सकें और उन लोगों के बीच स्थान पा सकें जो मुझ पर विश्वास करके पवित्र हो गए हैं। तो हम एक बार फिर धर्मग्रंथों में देखते हैं कि कैसे यीशु दुनिया को प्रबुद्ध करने के लिए आए हैं और यहां जॉन अध्याय 9 में इस व्यक्ति के अंधेपन की प्रकृति प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के अलावा भगवान के प्रति लोगों के अंधेपन की एक तस्वीर है।

तो जैसा कि यीशु ने कहा, और हम इसके साथ निष्कर्ष निकालते हैं, मैं दुनिया की रोशनी हूँ। जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। यह उन लोगों के लिए सच है जो देखने में सक्षम हैं और उन लोगों के लिए भी जो दृष्टिबाधित हैं।

यदि वे यीशु का अनुसरण कर रहे हैं, तो उनके पास जीवन की रोशनी है।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 11 है, टेन्स टाइम्स इन जेरूसलम, द ब्लाइंड मैन एंड द ब्लाइंड मैन, जॉन 9:1-41।